COSMOS: A JOURNAL OF GEOGRAPHY
ISSN: 3048-9938, Volume- 3, Issue- 4, October - December 2026

कुशीनगर जनपद में कृषि के विकास में क्षेत्रीय भिन्नता का भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 गिरिजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, श्री भगवान महावीर पी0 जी0 कालेज, पावानगर फाजिलनगर, कुशीनगर
(दी0द0उ0 गोरखपुर वि0 गोरखपुर)

सारांश

उत्तर प्रदेश का कुशीनगर जिला मुख्य रुप से कृषि प्रधान क्षेत्र है। जहाँ लगभग 77% भाग पर कृषि की जाती है। अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर रहती है। यहाँ की भौगोलिक बनावट, मिट्टी के प्रकार, सिंचाई के साधनों, वर्षा, फसल विविधीकरण प्रतिरुप, बाजार, परिवहन सुविधाओं में स्थानीय स्तर पर भिन्नता देखने को मिलती है। इन्ही भिन्नताओं के कारण कृषि विकास का स्तर सभी विकासखंडों भी अलग अलग परलक्षित होता है। अतः कुशीनगर जनपद में कृषि के विकास में क्षेत्रीय भिन्नता का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उददेश्य है। कृषि के विकास में क्षेत्रीय भिन्नता का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न चरों जैसे कृषि भूमि उपयोग विस्तार, फसल गहनता, सिंचाई विस्तार, सिंचाई तीव्रता, वाणिज्यिक फसल, कृषि जोत आकार तथा प्रति हैक्टेयर उर्वरक उपभोग को शामिल किया गया है यद्यपि आधुनिक कृषि उपकरण, उन्नतशील बीज कृषि विकास को प्रभावित करते हैं लेकिन इसका आँकड़ा उपलबध न होने के कारण शामिल नहीं किया गया। विभिन्न चरों से संबंधित आँकडे द्वितीयक स्त्रोत पर आधारित है। कृषि विकास की क्षेत्रीय भिन्नता का विश्लेषण Z score के द्वारा किया गया तथा Z score के योग के द्वारा Z composite index तैयार किया गया है। इसके आधार पर पाया गया कि कृषि विकास में हाटा, खड्डा दुदही तथा सेवरही अत्यधिक विकसित जबकि कप्तानगंज, रामकोला, मोतीचक, विशुनपुरा व पडरौना अत्यधिक पिछड़ा एंव सुकरौली, कसया, फाजिलनगर, तमकुही मध्यम स्तरीय हैं अतः प्रस्तुत शोध पत्र का निष्कर्ष यह है। कि कुशीनगर जनपद की कृषि विकास में क्षेत्रीय भिन्नता पाई जाती है।

मुख्य शब्द : कृषि भूमि उपयोग विस्तार, फसल गहनता, सिंचाई विस्तार, सिंचाई तीव्रता, प्रति हैक्टेयर उर्वरक उपभोग, कृषि जोत आकार, वाणिज्यिक फसल।

प्रस्तावना

कुशीनगर एक कृषि प्रधान जनपद है। जहाँ कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख आधार है और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में इसका सामाजिक एवं आर्थिक रूप से विशेष महत्व है। जनपद की लगभग 65% से अधिक जनसंख्या आजीविका के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है 2011 की जनगणना के अनुसार कुशीनगर की लगभग 95.29 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है कृषि मानव की सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों में से एक है। कृषि केवल खाद्यान्न उपलबध कराने का साधन नहीं है बल्कि ग्रामीण रोजगार, आय बाजार, उद्योग तथा सामाजिक सरंचना को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक है। किसी क्षेत्र के कृषि विकास का स्तर वहाँ उपलबध प्राकृतिक संसाधनों तथा मानव द्वारा उनके उपयोग करने की क्षमता पर निर्भर करता है। कृषि विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है यह अनेक परस्पर अध्ययन क्षेत्र निर्भर पारिस्थितिकी चरणों की

*Corresponding Author Email: girijeshkumar6969@gmail.com
Published: 17 November 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/COSMOS.2026.v3.i4.25493
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

प्रक्रिया है जो इसके स्तरों को प्रभावित करते हैं अतः पारिस्थितिकी दशाओं की गहन अध्ययन की आवश्यकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पारिस्थितिकी प्रदेशों तथा कृषि विकास प्रदेशों के सीमांकन की आवश्यकता है। कृषि विकास के उददेश्य के सीमांकन के लिए उनका मूल्यांकन कर श्रेणीकरण करना तथा उन उपायों का मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक है जो इनके स्तरों में भिन्नता लाने वाले जैविक तथा अजैविक पर्यावरण में संतुलन स्थापित कर सके। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा, कृषि में विषमताएँ कम होंगी तथा ग्रामीण तंत्रों की वहनीयता सुनिश्चित होगी (जसवीर सिंह, 1997) कृषि विकास समय के संदर्भ में परिवर्तनशील होता है। एक निम्न कृषि विकास के प्रदेश को सिंचाई, उर्वरक, कीटनाशक, उन्नतशील बीज यांत्रिक शक्ति के आधिकारिक प्रयोग के द्वारा उच्च स्तर के विकास के रूप में रूपान्तरित किया जा सकता है। अतः कृषि विकास किसी भूभाग के स्थाई लक्षण ना होकर वतमान स्थिति के द्योतक होते हैं।

यद्यपि कृषि क्षेत्र के विकास के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा विभिन्न कृषि से सबंधित विभिन्न योजनाएँ जैसे किसानों के आर्थिक सहयोग के लिए प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सौर कृषि पंप एवं सिंचाई के लिए पीएम कुसुम तथा आधुनिक कृषि उपकरण उपलबध कराने के लिए कृषि यंत्रीकरण योजनाएँ चलाई जा रही हैं। कुशीनगर जनपद के विभिन्न ब्लाकों जैसे कप्तानगंज, रामकेाला, मोतीचक, सुकरोली, हाटा, खड्डा नेबुआ नौरंगिया, बिशनपुरा, पडरौना, कसया, दुदही, फाजिलनगर, तमकुहीराज तथा सेवरही आदि का सामान्य अवलोकन करने से पता चलता है कि कुछ ब्लॉक अधिक विकसित अवस्था में हैं जबकि कुछ ब्लॉक अभी भी बहुत पिछड़े अवस्था में अतः कृषि के विकास का क्षेत्रीय विभिन्नता का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

कुशीनगर जनपद उत्तर प्रदेश के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित है जो गोरखपुर मंडल मंडल के अतर्गत आता है 13 मई 1994 में देवरिया जनपद से अलग होकर कुशीनगर बना। जो 26° 30 मिनट उत्तरी अक्षांश से 27° 15 मिनट उत्तरी अक्षांश तथा 83° 30 मिनट पूर्वी देशान्तर से 84° 25 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 2906 वर्ग किलामीटर है। जो उत्तर प्रदेश के संपूर्व क्षेत्रफल का 1% है। इस जिले के उत्तर में नेपाल, पश्चिम में महाराजगंज जनपद, पूर्व में बिहार राज्य, दक्षिण पश्चिम में गोरखपुर जनपद तथा दक्षिण में देवरिया जनपद स्थित है। कुशीनगर जनपद में पडरौना, हाटा, कसया तथा तमकुही राज 4 प्रमुख तहसीलें हैं। तथा 14 विकासखंड खड्डा, नेबुआ नौरंगिया, बिशनपुरा, पडरौना, कप्तानगंज, रामकेाला, मोतीचक, सुकरौली, हाटा, कसया, फाजिलनगर, तमकुहीराज, दुदही तथा सेवरही आदि हे। इस जनपद में मानसूनी जलवायु पाई जाती है यहाँ हिमालय से बहकर आने वाली मुख्य नदियों में छोटी गडक, हिरणावती घाघी (कुकुत्था) एवं बड़ी बड़ी गंडक है। कुशीनगर के आसपास के चारों तरफ के क्षेत्रों यदि देखा जाए तो मिट्टी का विभाजन, जलजमाव तथा मिट्टी की सरंचना से निर्धारित होती है इस आधार पर मिट्टी के वर्गीकरण भिन्नता पाई जाती है। दक्षिण में मटियार मिट्टी, पूरब में खादर तथा पश्चिम में भाठ मिट्टी पर्यात जाती है। जनपद का अधिकांश भाग समतल मैदान के रूप है। अतः कृषि के लिए अनुकूल जलवायु, जलोढ मिट्टी, पर्याप्त जल संसाधन की सुविधा, समतल धरातल के कारण कृषि यहाँ के लोगों की आजीविका का साधन है। जिसमें धान, गेहूं, मक्का, सरसों सब्जी तथा नकदी फसल के रूप में गन्ने तथा केला की खेती की जाती है। भौगोलिक परिस्थितियों में अंतर के कारण कृषि के विकास में क्षेत्रीय विविधता देखने को मिलती है।

संकेतकों का चयन

क्षेत्रीय भिन्नता की मापन की सबसे कठिन कार्य संकेतकों का चयन है। संकेतकों के उचित चयन के माध्यम से ही

कोई वास्तविकता का अनुमान लगा सकता है। कृषि के विकास को कई कारक प्रभावित करते हैं। कोस्त्रोविकी के अनुसार बाह्य कारकों में भौतिक कारक जैसे धरातलीय रचना, मिट्टी जलवायु की दशाएँ अन्य कारक जैसे परिवहन के साधन, बाजार की दशाएँ, कृषि उत्पादन के मूल्य तथा आंतरिक कारकों में जोत का आकार, सिंचाई, उर्वरकों, कीटनाशकों की पूर्ति, श्रम शक्ति निवेश, यांत्रिक, भूमि उपयोग क्षमता आदि को शामिल करते हैं। लेकिन शोधकत्ता ने कृषि के विकास के मापन के लिए सबसे प्रभावकारी कारक जैसे भूमि उपयोग की तीव्रता, फसल तीव्रता, सिंचाई विस्तार, सिंचाई तीव्रता, उर्वरक उपभोग, वाणिज्यिक फसल, कृषि जोत का आकार आदि का प्रयोग किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कृषि की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. कृषि संसाधनों का विकास खंडवार विश्लेषण करना।
3. भूमि उपयोग तथा शुद्व बोये गए क्षेत्र का विश्लेषण करना।
4. सिंचाई की तीव्रता एवं सिंचाई विस्तार में क्षेत्रीय विषमता का आकलन करना।
5. कुशीनगर जनपद की पिछड़ी ब्लॉक की पहचान करना।
6. कुशीनगर जनपद के संतुलित क्षेत्रीय विकास के लिए योजना बनाने के लिए रणनीति का अध्ययन करना।
7. कृषि विकास के बहुत उच्च, उच्च, मध्यम, निम्न तथा अति निम्न वाले क्षेत्रों का निर्धारण।

आँकड़ों के स्त्रोत एवं विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र आँकड़ों के संकलन के लिए द्वितीयक स्त्रोत का प्रयोग किया गया। जिसके लिए जिला सांख्यिकी पत्रिका (2023-2024), जिला जनगणना हस्तास्तिका, कृषि विभाग उत्तर प्रदेश, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग आदि। प्रात आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। जैसे Z score, समग्र कृषि विकास सूचकांक (Composite index)। जब चर की विभिन्न इकाइयों को जेड स्कोर में परिवतिर्वत किया जाता है तब अध्ययन से नीचे के मान ऋणात्मक तथा ऊपर के माना धनात्मक रूप में प्राप्त होते हैं प्रत्येक विकासखंड के विभिन्न चरों को 'जेड' स्कोर का योग करके 'जेड' सूचकांक ज्ञात किया जाता है अंत में 'जेड' स्कोर के सूचकांक को वर्गीकृत करके कृषि विकास क्षेत्रों का निर्धारण किया जाता है। इस विधि में किसी भी इकाई में चर विशेषता का धनात्मक उसके बाहुल्य को तथा ऋणात्मक मान उसके अभाव को सूचित करता है। इसके साथ ही मानचित्र तकनीक का भी प्रयोग किया गया है।

तालिका न0. 1 (भाग 1)

		कृषि भूमि उपयोग विस्तार %		फसल तीव्रता %		सिंचाई विस्तार %		सिंचाई तिव्रता %	
			Z Score		Z Score		Z Score		Z Score
1	कप्तानगंज	80.87	+.131	177	+.619	53	-1.377	147	-.415
2	रामकोला	74.04	-.900	149	-1.204	63	-.341	179	+.726

3	मोतीचक	76.02	-.601	172	+.293	60	-.652	147	-.415
4	सुकरौली	85.38	+.812	200	+2.116	52	-1.481	155	-.130
5	हाटा	84.46	+.673	176	+.553	61	-.548	197	+1.367
6	खड्डा	59.01	-3.169	155	-.814	71	+.488	195	+1.296
7	नेबुआ नौरंगिया	80.05	+.007	161	-.423	81	+1.526	131	-.985
8	विशुनपुरा	82.89	+.436	158	-.618	70	+.384	161	+.084
9	पडरौना	79.99	-.002	169	+.098	66	-.030	150	-.308
10	कसया	83.99	+.602	165	-.163	85	-1.941	96	-2.232
11	दुदही	82.92	+.441	160	-.488	69	+.281	145	-486
12	फाजिलनगर	82.23	+.337	192	+1.599	55	-1.170	176	+.619
13	तमकुहीराज	83.24	+.489	171	+.228	62	-.445	142	-.593
14	सेवरही	84.92	+.743	140	-1.79	80	+1.423	200	+1.474

तालिका न0. 1 (भाग 2)

		प्रति हेक्ट उपभोग		वाणिज्य फसल %		कृषि जोन का आकार .50 हेक्ट से 10. केबी		Z सूचकांक
			Z Score		Z Score			
1	कप्तानगंज	191	+.267	26	-.512	10	-1.852	-3.139
2	रामकोला	183	-.055	40	+.843	24	-.406	-1.337
3	मोतीचक	159	-1.021	30	-.125	42	+1.454	-1.067
4	सुकरौली	190	+.227	18	-1.284	24	-.406	-.146
5	हाटा	203	+.751	27	-.415	33	+.523	+2.904
6	खड्डा	214	+1.193	45	+1.326	47	+1.970	+2.290
7	नेबुआ नौरंगिया	147	-1.504	44	+1.229	20	-.819	-.969
8	विशुनपुरा	140	-1.786	44	+1.229	19	-.922	-1.193

ISSN: 3048-9938, Volume- 3, Issue- 4, October - December 2026

9	पडरौना	149	-1.423	29	-.221	36	+.833	-1.053
10	कसया	225	+1.636	10	-2.059	34	+.627	+.352
11	दुदही	195	+.428	44	+1.229	25	-.303	+1.102
12	फाजिलनगर	178	-.256	23	-.802	20	-.819	-.497
13	तमकुहीराज	214	+1.193	32	+.069	17	-1.129	-.188
14	सेवरही	183	-.055	36	+.456	20	-.819	+1.432

कृषि विकास संकेतकों का विकासखंडवार विश्लेषण

कृषि भूमि उपयोग विस्तार

उत्पादन में बृद्धि, रोजगार के अवसर, खाद्य सुरक्षा, किसानों की आय, कृषि आधारित उद्योग के लिए कृषि भूमि उपयोग विस्तार आवश्यक होता है। अतः भूमि उपयोग विस्तार कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण साधन हैं। तालिका नम्बर 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि कुशीनगर जनपद के 14 विकासखंडों में 4 विकासखंड सुकरौली, हाटा, कसया व सेवरही में कृषि भूमि उपयोग का विस्तार उच्च है जबकि खड्डा विकासखंड का भूमि उपयोग विस्तार अति निम्न हैं 7 विकासखंड कप्तानगंज, नेबुआ नौरंगिया, विशुनपुरा, पडरौना, दुदही, फाजिलनगर, तमकुही आदि में मध्यम विस्तार है जो सभी विकासखंडों का 50% भाग है। जबकि रामकेाला मोतीचक आदि में निम्न स्तरीय विस्तार है।

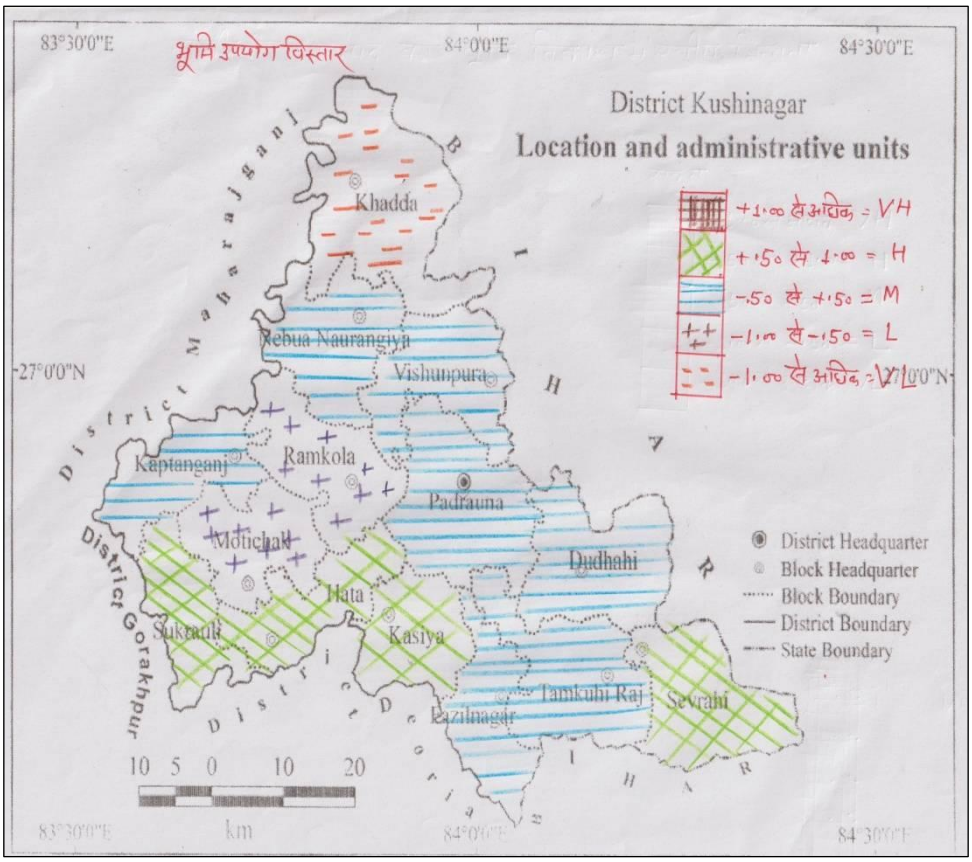

ISSN: 3048-9938, Volume- 3, Issue- 4, October - December 2026

तालिका न0. 2

Category	No of Block	%
VH	00	00
H	4	29
M	7	50
L	2	14
VL	1	7
	14	100

फसल तीव्रता

कुल खेती योग्य क्षेत्र और शुद्ध बोये गए क्षेत्र का प्रतिशत के अनुपात में व्यक्त किया जाता है। इसमें एक वर्ष में भूमि की एक ही इकाई से एक से अधिक फसल उगाने पर विचार किया जाता है। तालिका नम्बर 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि विकासखंड सुकरौली (2.116), फाजिलनगर (1.595) का फसल गहनता का स्तर बहुत अधिक है जबकि रामकोला तथा सेवरही विकासखंड का फसल तीव्रता अति निम्न हैं। कप्तानगंज, हाटा का फसल गहनता उच्च स्तरीय है मोतीचक, नेबुआ नौरंगिया, पडरौना, कसया, दुदही, तमकुहीराज का फसल गहनता मध्यम स्तर पर है। जो सभी विकासखंड का 42.85% जबकि खड्डा, विशुनपुरा का फसल गहनता निम्न स्तर का है।

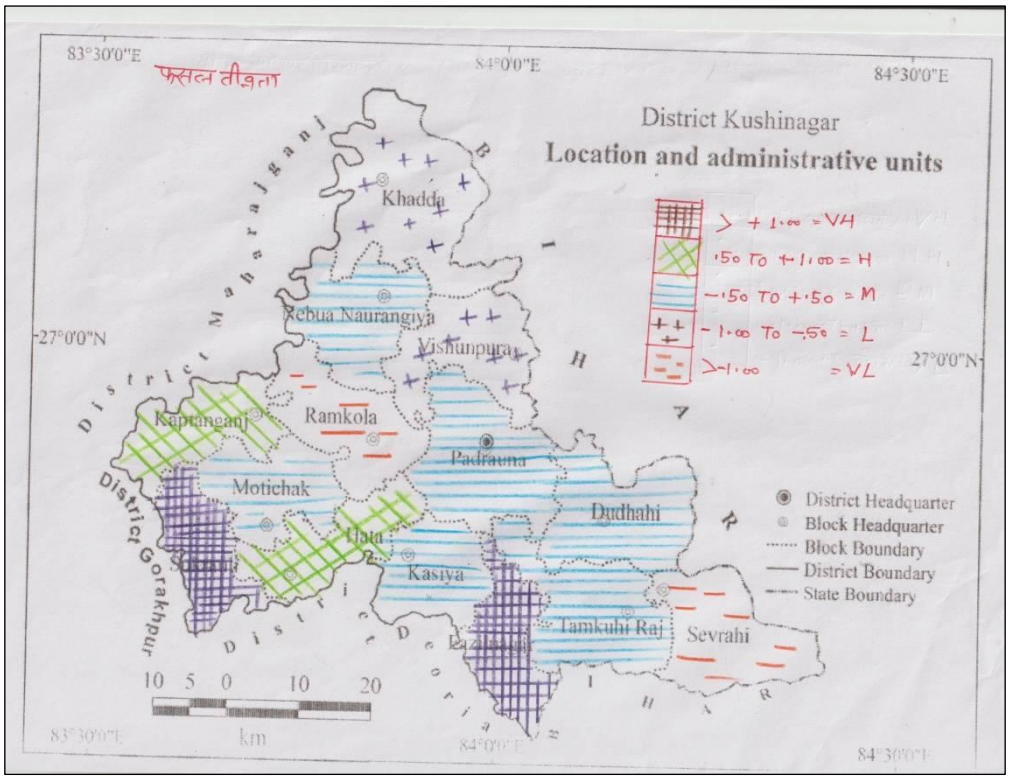

तालिका न0. 3

Category	No of Block	%
VH	2	14.29
H	2	14.29
M	6	42.55
L	2	14.29
VL	2	14.28
	14	100

सिंचाई विस्तार

सिंचाई सीमा सकल सिंचित क्षेत्र और शुद्ध बोया गया क्षेत्र का प्रतिशत होता है सिंचाई कृषि क्षेत्र को उपलबध कराने का कृत्रिम स्त्रोत में से एक है तालिका नम्बर 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद के 14 विकासखंडों में नेबुआ नौरंगिया (1.526), कसया (1.941), सेवरही (1.423) में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार अत्यन्त उच्च स्तरीय है जबकि सुकरौली (-1.481), कप्तानगंज (-1.377), फाजिलनगर (-1.170) में सिंचाई सुविधाएँ अति निम्न हैं। जबकि रामकेाला, खड्डा, विशुनपुरा, पडरौना, दुदही व तमकुही राज में मध्यम स्तरीय विकास है। मोतीचक, हाटा में सिंचाई विकास निम्न स्तरीय है।

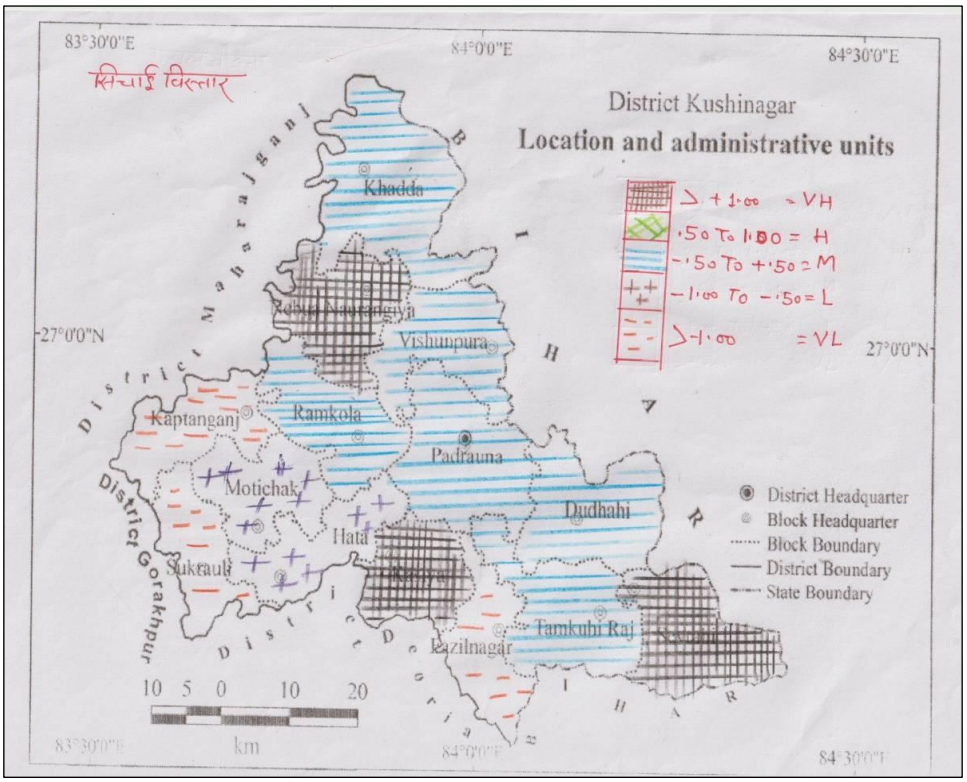

तालिका न0. 4

Category	No of Block	%
VH	3	21.43
H	-	-
M	6	42.85
L	2	14.29
VL	3	21.43
	14	100

सिंचाई तीव्रता

कुशीनगर जनपद की कृषि मानसून पर निर्भर होती है। अतः सिंचाई कृषि विकास के महत्वपूर्ण चरों में से है। पानी की नियमित आपूर्ति कृषि उत्पादकता को बढाती है (जसवीर 1974) इसमे सकल सिंचित क्षेत्र तथा शुद्ध बोय गए क्षेत्र के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। तालिका नम्बर 5 के अवलोकन से स्पष्ट है जनपद के तीन ब्लॉक हाटा (1.367), खड्डा (1.296), सेवरही (1.474) सिंचाई गहनता के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन रहा है जबकि सिंचाई तीव्रता के मामले में कसया (-2.232) विकासखंड सबसे पिछड़ा क्षेत्र है। रामकोला, नेबुआ नौरंगिया, फाजिलनगर तमकुहीराज अच्छा प्रदर्शन है। जबकि कप्तानगंज, मोतीचक, सुकरौली, विशुनपुरा, पडरौना, दुदही का प्रदर्शन मध्यम स्तर का है।

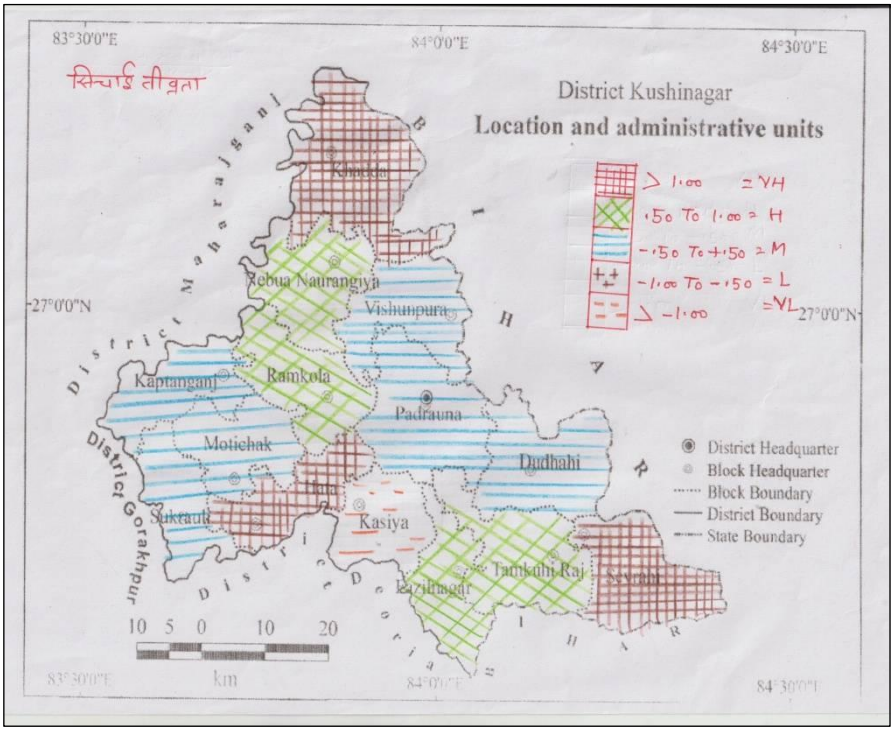

तालिका न0. 5

Category	No of Block	%
VH	3	21.43
H	4	28.57
M	6	42.86
L	-	-
VL	1	7.14
	14	100

रासायनिक उर्वरक उपभोग

उर्वरक कृषि उत्पादन बढाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। फसलों को आवश्यक पोषक तत्व जैसे नाइट्रोजन फास्फोरस और पोटाश उपलबध कराकर उर्वरता बनाए रखना और फसल उत्पादकता बढाने में सहायता करते हैं। प्रति हेक्टेयर में कुल कितने किलोग्राम उर्वरक उपभोग के आधार पर विश्लेषण किया गया है तालिका नम्बर 6 की अवलोकन से स्पष्ट होता है कि कुशीनगर जनपद के खड्डा (1.296) और तमकुहीराज (1.193) रासायिनक उर्वरक खपत के मामले में बहुत अच्छा प्रदर्शन है। जबकि उर्वरक उपभोग के मामले में मोतीचक (-1.021), नेबुआ नौरंगिया (-1.150), विशुनपुरा (-1.786) और पडरौना (-1.423) का अच्छा प्रदर्शन नहीं है। हाटा विकासखंड रासायिनक उर्वरक उपभोग के मामले में अच्छा है तथा कप्तानगंज, रामकेाला, सुकरौली, दुदही, फाजिलनगर मध्यम स्तरीय है।

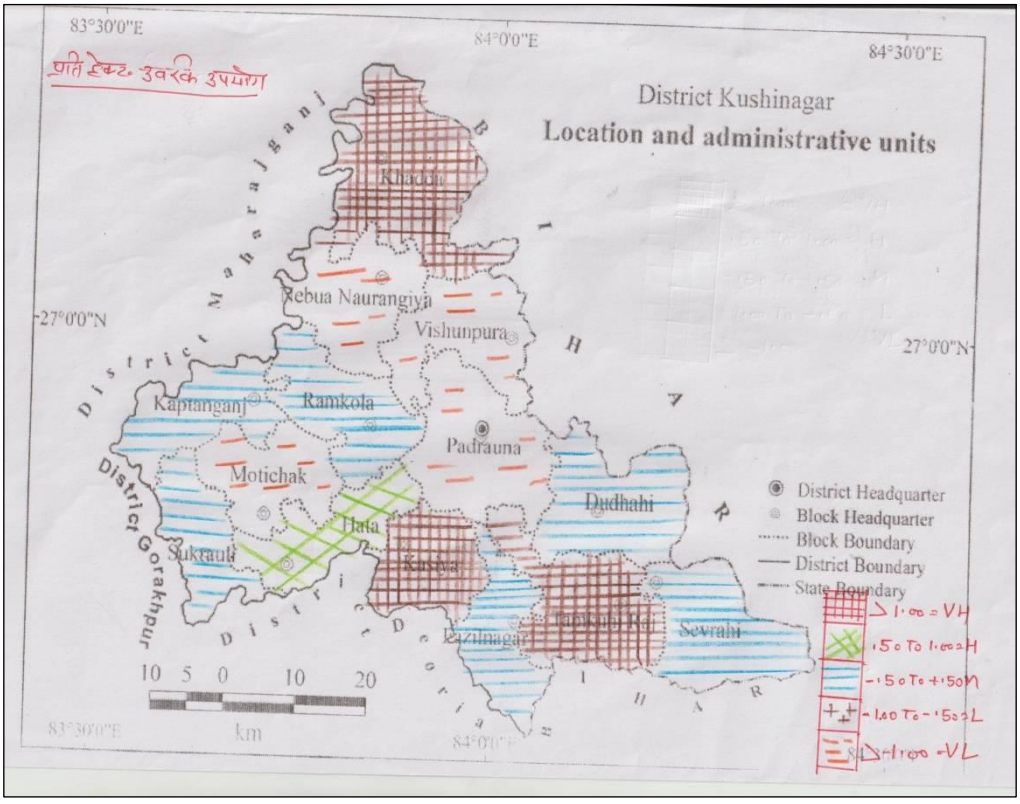

तालिका न0. 6

Category	No of Block	%
VH	3	21.34
H	1	7.14
M	6	42.86
L	-	-
VL	4	28.57`
	14	100

वाणिज्यिक फसल

कुशीनगर जनपद में गन्ना प्रमुख व्यवसायिक फसल है। साथ ही कुशीनगर को One District One Product (ODOP) के तहत केला उत्पादन के लिए विशेष पहचान मिली जिले मे लगभग 10000 हे0 क्षेत्र मे केले की खेती की जा रही है। इसके अतिरिक्त कुछ क्षेत्रों में केला, सब्जियाँ, मक्का आदि का उत्पादन किया जाता है जो खाद्यान्न फसलों की तुलना में अधिक लाभदायक है। तालिका नम्बर 7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है खड्डा (1.326), नेबुआ नौरंगिया (1.229), विशुनपुरा (1.229) तथा दुदही (1.229) विकासखंडों में गन्ने की खेती सबसे अधिक होती है। जबकि सुकरौली (-1.284) तथा कसया (-2.059) में व्यावसायिक फसल के रूप में रूझान सबसे कम है। रामकोला विकासखंड में अच्छा प्रदर्शन है तथा मोतीचक, हाटा, पडरौना, तमकुहीराज और सेवरही विकासखंड में व्यावसायिक फसल उत्पादन में मध्यम स्तरीय हैं। फाजिलनगर व कप्तानगंज विकासखण्ड व्यवसायिक फसल उत्पादन में निम्न स्तरीय है।

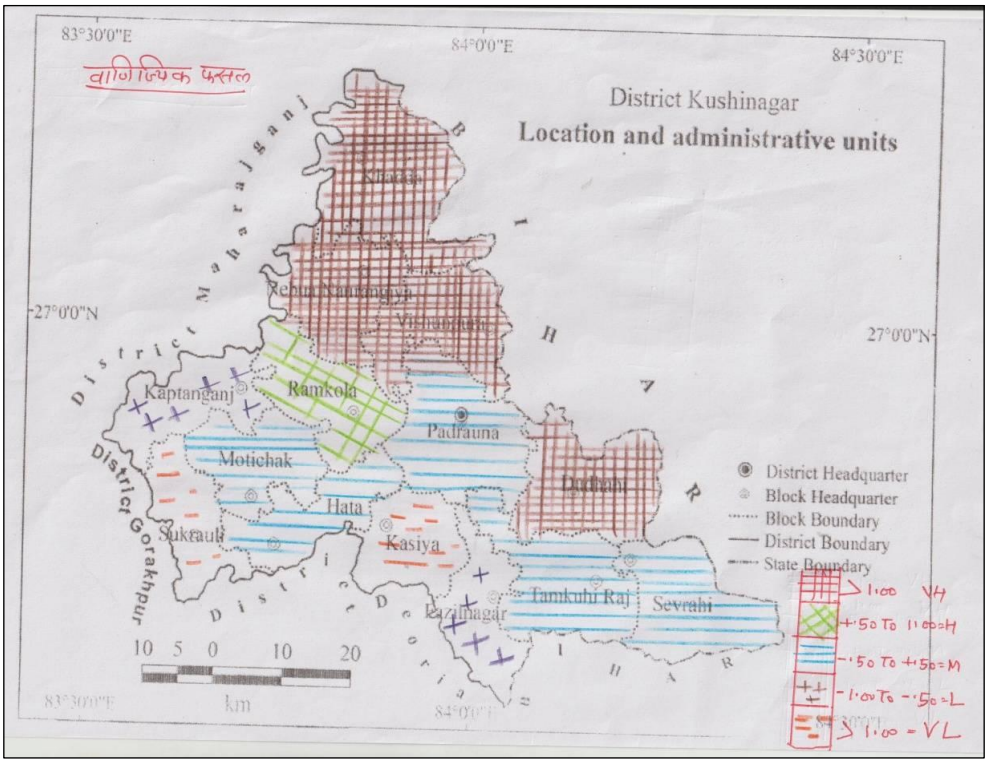

तालिका न0. 7

Category	No of Block	%
VH	4	28.37
H	1	7.14
M	5	35.71
L	2	14.29
VL	2	14.29
	14	100

कृषि जोत का आकार

सुव्यवस्थित एवं एकीकृत कृषि जोत आकार में आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रयोग, फसल विविधीकरण, आधुनिक तकनीकं का प्रयोग आसान होने कृषि उत्पादकता में वृद्धि होती है। जबकि छोटे एवं विखरे खेतों में संभव नहीं है। तालिका नम्बर 8 के अवलोकन से मोतीचक (1.454) व खड्डा (1.970) विकासखंड का (.50 हैक्टेयर से 10 हैक्टेयर) कृषि जोत आकार सबसे अधिक है जबकि कप्तानगंज (-1.852) व तमकुहीराज (-1.129) का सबसे कम है यहाँ छोटे कृषि जोत का आकार अधिक है रामकेाला सुकरौली दुदही विकासखंड का कृषि जोत का आकार मध्यम स्तरीय हैं। नेबुआ नौरंगिया विशुनपुरा फाजिलनगर व सेवरही ब्लाक मे कृषि .50 हे0 से कम है।

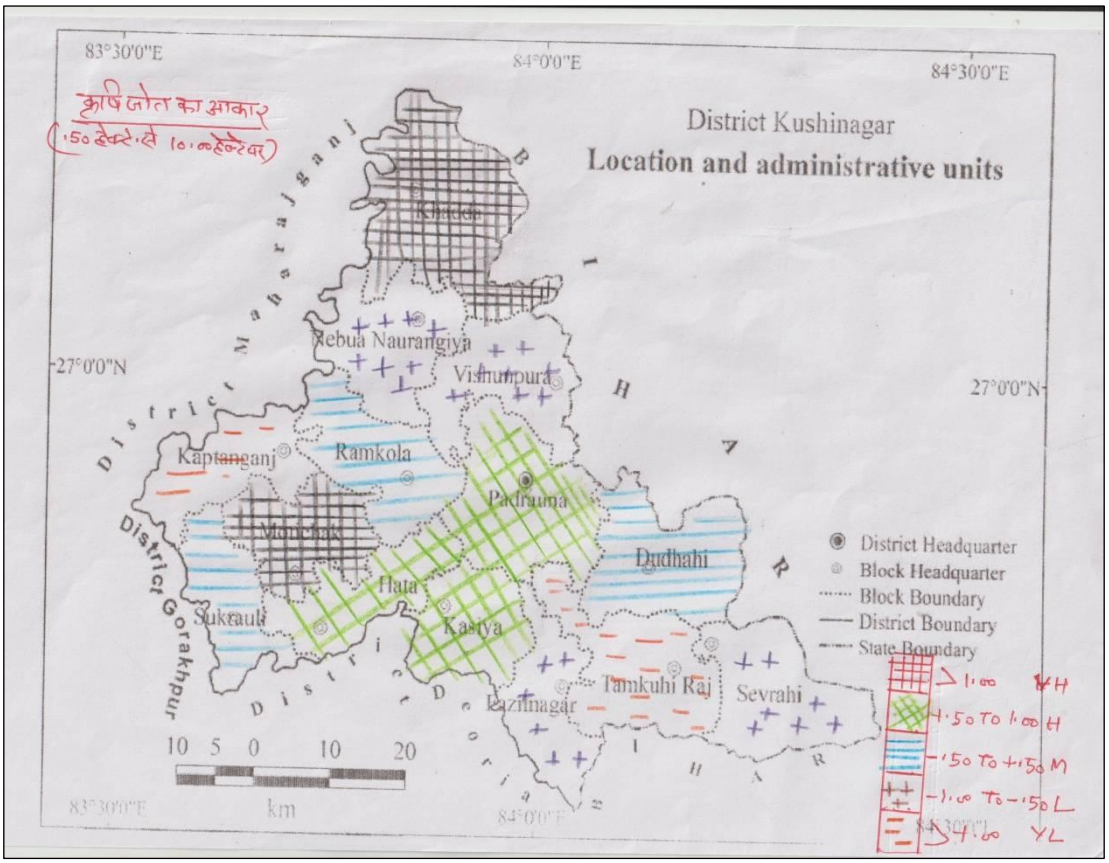

तालिका न0.8

Category	No of Block	%
VH	2	14.28
H	3	21.43
M	3	21.43
L	4	28.57
VL	2	14.29
	14	100

समग्र कृषि विकास (Z सूचकांक)

प्रत्येक चरों का जेड स्कोर का योग करके सूचकांक तैयार किया गया है। इसके आधार पर जनपद का कृषि विकास में क्षेत्रीय भिन्नता का आकलन किया गया है। कुशीनगर जनपद के चार विकासखंड जैसे हाटा (+2.904) खड्डा (+2.290) दुदही (+1.102) सेवरही (+1.432) कृषि विकास के मामले में सबसे अच्छा प्रदर्शन है। क्योंकि सिंचाई के समुचित साधन उपलबध है साथ ही सिंचाई गहनता, उर्वरक उपभोग मात्रा अधिक, तथा व्यवसायक फसल के .ग गन्ने की कृषि अधिकांश भागों में की जाती है। जबकि कप्तानगंज (-3.139), रामकोला (-1.337), मोतीचक (-1.067), विशुनपुरा (-1.193) तथा पडरौना (-1.053) कृषि विकास के मामले में सबसे पिछड़ा क्षेत्र है इसका प्रमुख कारण कृषि जोत का आकार छोटा होना, सिंचाई के साधनों का कम विकास, व्यवसायिक फसलों की खेती का अभाव तथा खाद्यान्न फसलों की अधिकता एवं फसलों में उर्वरक उपभोग का कम प्रयोग होना है। सुकरौली, कसया, फाजिलनगर व तमकुहीराज विकासखंड कृषि विकास मध्यम कोटि का है क्योंकि सिंचाई के साधनों का विकसित न होना, कृषि जोत का छोटा आकार है। जनपद का नेबुआ नौरंगिया विकासखंड पिछड़ा क्षेत्र है क्योंकि सिंचाई गहनता में कमी तथा प्रति हेक्टेयर उर्वरक उपभोग मात्रा में कमी है।

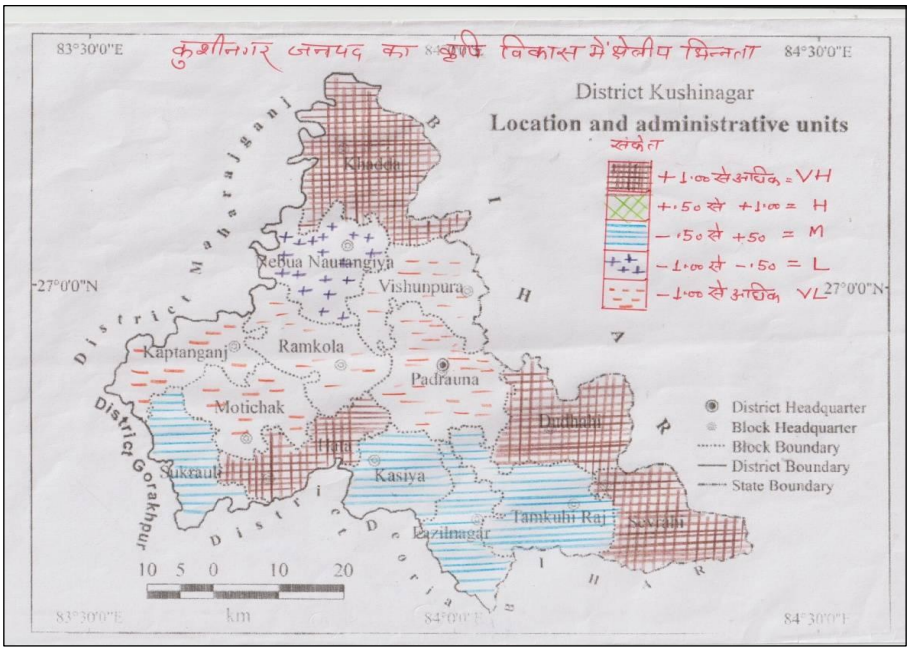

तालिका न0. 9

Category	No of Block	%
VH	4	28.57
H	-	-
M	4	28.57
L	1	7.14
VL	5	35.72
	14	100

निष्कर्ष एवं सुझाव

कुशीनगर जनपद में कृषि के विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का विश्लेषण करने के पश्चात कहा जा सकता है कि कृषि विकास का स्वरूप प्रत्येक विकासखंड का भिन्न-भिन्न है किसी क्षेत्र का कृषि विकास प्राकृतिक संसाधनों तथा मानव निर्मित सुविधाओं का संयुक्त प्रभाव का परिणाम होता है। अतः विकासखंड स्तरीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि जिले का 28.57 क्षेत्र जिसमें हाटा, खड्डा, दुदही, तथा सेवरही ब्लॉक सबसे अधिक विकसित क्षेत्र है जबकि जनपद का 35.72 प्रतिशत क्षेत्र जिसमें कप्तानगंज, रामकेाला, मोतीचक, विशुनपुरा व पडरौना ब्लॉक कृषि विकास के मामले में सबसे अधिक पिछड़ा क्षेत्र है तथा सुकरौली, कसया, फाजिलनगर व तमकुहीराज ब्लॉक क्षेत्र का कृषि विकास मध्यम उच्च है अतः कृषि के विकास के लिए एक ही योजना सभी क्षेत्र के बजाय क्षेत्र विशिष्ट रणनीति आवश्यक प्रतीत हो रहा है अत्यधिक पिछड़ो क्षेत्र में सिंचाई के साधनों का अभाव है वहाँ सिंचाई के साधनों का विस्तार आवश्यक है। उर्वरक उपभोग की मात्रा को बढाने खाद्यान्न फसलों की अपेक्षा किसानों को व्यावसायिक फसल के रूप में गन्ने की खेती के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना आवश्यक है। साथ ही समय पर रासायिनक उर्वरक की उपलबध्ता आवश्यक है। किसानों को उन्नतशील बीज जैविक खाघ एंव आधुनिक कृषि तकनिको की जानकारी देनी चाहिए साथ ही सस्तीदर ऋणएबीमा एंव सरकारी योजनाओं का लाभ उपलब्ध कराया जाए । कृषि क्षेत्र के विकास के लिए महात्मा बुद्र कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुशीनगर की स्थापना क्षेत्रीय भिन्नता कम करने में मील का पत्थर साबित होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. जिला सांख्यिकी पत्रिका, कुशीनगर ।
2. गौतम अलका (2022), कृषि भूगोल, प्रयागराज : शारदा पुस्तक भवन।
3. मौर्य, एस0डी0 (2022), आर्थिक भूगोल, प्रयागराज : प्रवलिका पब्लिकेशन।
4. सिह, जगदीश (2019), आर्थिक भूगोल, गोरखपुर : ज्ञानोदय प्रकाशन ।
5. उत्तर प्रदेश सरकार, कृषि विभाग, कृषि सांख्यिकी एवं संबंधित प्रकाशन ।
6. जिला प्रशासन कुशीनगर, कुशीनगर जनपद की अधिकारिक वेबसाइट

ISSN: 3048-9938, Volume- 3, Issue- 4, October - December 2026

7. तिवारी, आर0सी0, सिंह, बी0एन0 (2007), कृषि भूगोल, इलाहाबाद : प्रयाग पुस्तक भवन।

8. Kushawaha, M. Kumar, A, Yadav, Pandey, D.C. (2019), Agricultural Regionalization through Measurement Crop Concentration in Kushinagar District, Uttar Pradesh.